

Handwritten text in three lines, likely in a script from the Indian subcontinent, possibly Devanagari or a related script. The text is faint and difficult to decipher.

I 1887

340
stotra
winda

Handwritten text in three lines, likely in an ancient script such as Pictish or Gaelic, rendered in dark ink on aged, yellowed parchment.

I **1880** SEALING

340
Stora
Linda

Handwritten text in a single line at the bottom of the page, continuing the script from the top section.

श्रीमन्नमो देवाय नमः ॥ नमो संकता देव्य नमः ॥ नमः
रुक्ता देव्य नमः ॥ नमो का सि नि वा सि
वि नमः ति रे सदा अरिः । तं सिद्ध र र्तो पू पू स्व
दावादि पूजि ति स च देवं नमो संकता कस्त
कर नि प्र वा नि नमो मि नि मो नि मो दि तं
न से त्यं सदा यं व द मि ह से वि क ता न

सदा मि श न य मि शु ना रु प व र मि ॥ ४ ॥ नमो स
कता ॥ १ ॥ नमो ख शु ह त स
श्री नमः ॥ श्री कानि कम धुः से उ मे व । द नि मा दे स्य रे ति
या को मा रि रि पू द प ना स न क रि य का यो था । व्र ल्ळ वि
वा रा दि य न चो र ध र्म सु रिः दि दि च व र्जा यो था । च सु ध
श न ना थ ने र व र कान्ति मे मा त्रि का

ॐ नमः आकाशाय ॥ ॥ मेघे मेघे दुर्मन्वरं वनभुवश्यामास्तमाः
लघुमेघे नक्तं मितरप्यन्वमेव तदिमं राधे गृहे प्राप्नुय ॥ इदं न
दनिदेशतश्च तयोः प्रत्यक्षं कुजद्रुमं राधामाधवयोर्जन्मिषु
नाकुले रहके लयतः ॥ १ ॥ ॥ ओम् उमास्तवरागे ॥ प्रहयपयोधि
जले धितावानसि वेदः विहितवाहि नमस्वेदं केसवधृतमीतस
रिरः जय जगदिसहरे ॥ १ ॥ धितिरतिविपुलतलेः तवति एति

पिष्टेः धरणि धरणा किराचक्रगारिष्टे केसवधृतकूर्मशः
रीरः जय जगदिसहरे ॥ २ ॥ वसतिदत्तनराखरे धरणी तवः
समाशितिकलंकं कल्लो वनिमम्नाः ॥ केसवधृतवासुकररूपः ॥
जय जगदिसहरे ॥ ३ ॥ तव कवरमणवैरे नखमद्भुतशृंगैः द
रितरिरराय ककिपुतनुभृगी ॥ कसवधृतनरहरिरूपः जय ज

गदिसहरे ॥४॥

गार्द को नङ्ग १ विराला को विष्णु १ हाति को न
ङ्ग १ साप को गड को १ तुजुर को पुष्कर १ कोशे १
कृत्तुर १ हिड १ साप को काजुलि १ देपारो को
● छाड को १ वातर को रउ १ विराला को रउ १
सिवति माल १ काठ को वोको १ गच्छ को १
डोरि को जुत १ वेत्तार १ हारि ताल १ वाय को
विष्णु १ साहा शु पयना पा पा दि धर मान

नमो संकता देव्यो नमः ॥ नमो कासि निवा सिनि गंगा तिरे सदा भवति
सिधुर रक्त पुष्प सदा भवति वंदितं पुजितं सर्व देवः नमो सकता
नमो मोहिनि मोहितं भुगल्य न्य सदा च दुवदनि हस्य विक्रमदा
नं सदा मिग यज्ञि गुणारूप वृद्धिः नमो संकटाः नमो षड्गुहता
गले रू दसा नमो गजितं भुजि कपायमानः सदा सन्दितां भुवस
सिवा सुरे न न नमो संकटाः नमो श्री देवि माता नमो योगिनि जो

गस्य सदा कामिनि सोहितं कामराजः नमो सकलः नमो पुष्पसया
अक्षरसमासा सदा कोकिलकौचं नंतपवदति सद्यरनयिजा
सनुसंधारकरनिःतमो सकलः ॥ इदं पवररपठे त्वानि कालं हरेत्वा
ते ते न के बंधमशानं सदा दुषमेकषमेरके पादाः नमो सकलः ॥ तु
रुतकतायोगिनि जोगध्यानं तुहिकामिनि कामराजं तुहिकामविष्य
मोलाकररक्षुरभातं इति श्रीमत्तत्पंकतालोचनसंपूर्णं ॥ ॥ ॥

हं सिद्धि वकां वै इति वाकां वै इतिः न इत्यर सिद्धि श्री वज्र
योगिनि सिद्धि शुभश्रुत्या हाहु फलपत्या हा ॥ ॥

तस्य सा म म आ ण म न म म र रा जो स्य मा हा दे वो न है व ढा
व यं यं न्या द व यं यं न्या द व यं यं न्या द व यं यं न्या द व यं यं न्या द व यं यं न्या द
दि दे वो मा हा दे वो क्त स्या कु र दे व तः हर स जो मा हा दे वो
न त स्या वि स्य स्वर सा ग र दु र् ल भ सि वा क्त क मि दं पू र्ण यो
य ये त दि रि वो क्त ते न त्पो मि त्प म य ना स्ति स त्प तं त्य व द
मे हः इ ति आ मा हा दे व ना म तो त्रै संपूर्ण ४॥ सु भ न म त्प ४॥

हे नमः॥ आगशोयनमः॥ नमो सैकदा देव्यो नमः॥ रामो का सि
निवाति निजगतिरे सदा अविर्तं सिन्दुररक्त पुष्पं सदा वंदितं
पुजितं सर्वदेवं नमो संकटा कस्त हार निभवा नि॥१॥ नमो मोहि
निमोहिनी नुत सै न्य सदा वन्द्य वदनिहसे विक्रम दातः सदा
मिग घनि गुरा ह्य वरणिः नमो सैकदा देव्यो नमः॥१॥ नमो ख

गतिष्ट मेवे ह्ये आता नमो गी नृजितं नुमि कं वा यमानं सदा
मन्दी तं नुत म हि वा सुरे न नमो संकटा देव्यो नमः॥३॥ नमो
कटिः देवि नमो देवि माटा सदा यो गि गि जो ग म्य सदा का
मिनि मोहिनी का मराजी नमो सैकदा देव्यो नमः॥४॥ नमो पुष्प
समागरे रत्न माहा सदा का इ किही की वनी ह्य वर्गी सदा

र। न विष्णुपतिसंस्तु संहार करतिः न तो स कदा देवौ न म ॥ ५ ॥ इ
दं सचरन्नपथेत्यानि कदाहरेत्यापेते न केवंच मर्शा
नैसाद्यदृष्टमेकस्तमेरक्षापाह्यः न मो संकटा देवौ न
म ॥ ६ ॥ तो हि संकटा योगीशी योग ध्यानैः सदा कामिनि
कामसाजं नु हि वि श्वमाताः करस्वत्प्रधारैः संकटाः

दिव्यो न म ॥ ७ ॥ इति श्रीमत्तः संकटाटोत्रस्य पुरां मसमाप्तं

ओ गतो सायन म ॥ अस्मिन्नाथ हरे हरसे वितेः इव हलाः सुर नि
रुदोऽस्य ॥ १ ॥ रुद्र फनि गितो च न वा रुत रार नोऽथ रुद्रि रक्षर वा ठ विः
या वि तै ॥ २ ॥ रुद्रि रक्षर न शो भन ना नुजाः रुद्र वि लो क शि स फला थ
रुद्र रता शर रार न दी सा ज नो कुरंः धर निा नार धुर धर रः

कामी ॥ २॥ हसत न जित कुंक्ष घन द्युतेः निज ज नो व विना थ क पा नि
 वत क किट न हृद वा पा वि नैः निज ज नै व धितं य ड ति दि क ॥ ३॥ ह मि द्रु स
 वे स क लो द्रु स प क्ष वो द्रु स क ता कि ल के रि स मा रे क ॥ सं क ल थ म व थ
 य धि क प्र भोः स म य मा म क पा य म शे व क ॥ ४॥ ज य ज गं क्ष ग ना थ ज
 ग न्म यः ज य ति की त म ना त न वा त कः मु नि ग रा क्ष वि भू व रा का य
 कीः क ति ति जा कं र व ग ना थ ग तं न जे ॥ ५॥ अ क्ष रा च ह रे द र ध रं क लं स
 फ लं प्रो द ति दी गीः व र्गा रु टि ति जा नि मा उ मु र्धः क थ्य म व य २५ ॥

इ त्थ न आ ३ वि ना म णी ल मा प्रे म ॥ सु न म लुः स हा पु र्णः श्व रि य र १ रु वि
 र २ ह स न ४ मृ द रा धे ८ श्री ज य ज ग न १६
 वं स ते वा स ते कु सु म सु कु मो रै र व य वेः ध्र मं ती कां ता रे बु दु वि दि न
 कि ल्मा नु स र णी



कं न म ॥ भा रा य णा यो न म ॥ वि धू प ज्ञा ल क न्दी व्यं स र्व दु स्तु नि वा
 र णीः ४ अ ते जो म ह वि ध्याः स र्व स स्तु नि वा र नः वि पू रं द ज्य मा नं त्र वी ष
 ना इ स्वरं त्रिं तीः त द हं स प्र व द्या मि आ त्मा र के हा दा न वे त ॥ २॥ वा

स्वस्ति श्री ४

हैर के नू गो विंद ज ड च यो स्तुति विक्रम उर न्या म के स वो र के क
त्यां चै वी ज ना ह नै ॥३॥ ना नै स्तु अ चै तै र के जू झ ल वा म न लु था
उर लो य स ना न यु हु रि पित व रा के सा ॥४॥ वा म या स्व त तो विष्णु
द द्वि ने म य सु द नै वा हु व्यां वा स्तु दे व स्वः दु द र्प य ज ना ह
नै ॥५॥ क थ्य र क त वा रा ह कि स्त स्व मू र्व म द लोः सा व वो
क र्ण पो र के हि पि के स च ना सि के ॥६॥ शी व र्द स र्व गा ने

पु अ ग्नि यां आ चर स्त था र डे मे पू र षो त मः पू र्व रू पू र्ण रि
को डेः वा ग्नि यां आ चर स्त था ॥७॥ द द्वि ने ना र सिं ह तू नै रि त्या
तु ल सो द रः पू र षो त म वा र्द न्यां वा यू व्यां पि त वा स स ॥८॥ ग
जा चर तू को के रः स व मि ता न तो दि सिः वा ता लो पू र द दारु के था क
से पू र द र्म नै ॥९॥ रा नि धे स र्व गा ने प्र वि नो वि स्तु पू ज लीः ॥
मि नी ना रा गो र के ल ला ते ग र द यो णिः का पा ले रू क श वो र
दे व न ल नू त ज त र के सि ॥ वि स्तु प ज हा वि स्तो